द्विवेदीयुगीन कविता की मुख्य प्रवृत्तियाँ

राष्ट्रीयता :— बढ़ती हुई राजनीतिक चेतना तथा सांस्कृतिक पुनरुत्थान के परिणाम-स्वरूप राष्ट्रीयता द्विवेदी युग की प्रधान भावधारा थी।

अतः तत्कालीन कविता का मुख्य स्वर भी राष्ट्रीयता है। इस युग के प्रायः सभी कवियों ने देश-भक्तिपूर्ण कविताओं का सृजन किया। इन्होंने पराधीनता को सबसे बड़ा अभिशाप बताया तथा स्वतंत्रता प्राप्ति के लिए क्रांति एवं आत्मोत्सर्ग की प्रेरणा दी।

कविवर शंकर ने बलिदान गान में कहा था :—

देश भक्त वीरों
मरने से नेक नहीं डरना होगा
प्राणों का बलिदान देश की वेदी
पर करना होगा।

मैथिलीशरण गुप्त की ओजस्वी हुंकार निम्नलिखित शब्दों में प्रकट हुई है :—

धरती हिलकर नींद भगा दे
वज्र नाद से व्योम जगा दे
देव और कुछ लाग लगा दे।

रामनरेश त्रिपाठी अपनी रचनाओं में परोक्ष रूप से परतंत्रता के बंधन काटने का संदेश देते हैं। इसी प्रकार इनकी रचनाओं में मुक्ति की अवधारणा मिलती है। निश्चय पूर्वक कर्तव्य पथ पर बढ़ने की प्रेरणा दी गई है।

प्रस्तुत: निर्दिष्ट पंक्तियों में कवि ने [illegible] और [illegible] अतीत के गौरव का गान करते हुए देश की वर्तमान दशा पर क्षोभ प्रकट किया है।

इनकी रचनाओं में [illegible] प्रमुख [illegible] भारत - भारती [illegible] और [illegible] रचना है। जिसमें विगत भारत, वर्तमान भारत और भावी भारत की चिंता की [illegible] करता है।

3 लोक का गौरव

[illegible] का मूल भावार्थ

प्र.सं. 2

[illegible] लिखिए

[illegible] और [illegible] [illegible]।

[illegible] [illegible] से [illegible] [illegible] का उत्कर्ष [illegible]

प्रश्न - 2 [illegible] प्रयाग [illegible]

Scanned with CamScanner

उसका कि जो अधिमूली है—
वह होगा भारत वर्ष है।

देश की दीन दशा — भूखे, गरीबी
शोषित तथा कला — कौशल के
अभाव - पर भी कवियों ने ध्यान
आकृष्ट किया।

ठाकुर गोपाल शरण
सिंह की काव्य पंक्तियाँ द्रष्टव्य
है:—

वह वीरता कहाँ है
गम्भीरता कहाँ है?
वह वीरता हमारी है
वह कहाँ बताये
क्या हो गई कलायें
कौशल अभी हमारे?
किसने शताब्दियों की
छीन सब कमाई?

इस प्रकार द्विवेदीयुगीन काव्य में
जनसाधारण को काव्य-विषय के
रूप में पर्याप्त स्थान प्राप्त हुआ।

पेज - 3

अर्थशास्त्रभाग
04/07/2026

भारती प्रकाश २०२६